DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

6 April, 2024

एक्सचेंज ट्रेडेड करेंसी डेरिवेटिव्स

संदर्भ: *भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने हाल ही में एक्सचेंज ट्रेडेड करेंसी डेरिवेटिव्स (ETCD) बाजार के लिए अपने नए मानदंडों के कार्यान्वयन को 5 अप्रैल से 3 मई तक के लिए टाल दिया।*

➢ **एक्सचेंज-ट्रेडेड डेरिवेटिव्स (ETD) क्या हैं ?**

- ETD, विनियमित एक्सचेंजों पर कारोबार किए जाने वाले मानकीकृत वित्तीय अनुबंधों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो निवेशकों को पारदर्शिता, तरलता और केंद्रीकृत समाशोधन तंत्र प्रदान करते हैं।
- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) जैसे बाजार नियामक निष्पक्ष और व्यवस्थित व्यापार प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए ईटीडी को नियंत्रित करने वाले नियमों को स्थापित करने और लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- ये व्युत्पन्न उपकरण विभिन्न अंतर्निहित परिसंपत्तियों जैसे स्टॉक, बॉन्ड, कमोडिटी, मुद्राएं या सूचकांक से अपना मूल्य प्राप्त करते हैं, जिससे निवेशकों को कीमतों का अनुमान लगाने या जोखिमों से बचाव करने की सुविधा मिलती है।

➢ **डेरिवेटिव्स के प्रकार :**

- डेरिवेटिव्स में वित्तीय उपकरणों की एक विस्तृत श्रेणी शामिल होती है जो अंतर्निहित परिसंपत्तियों के मूल्य में उतार-चढ़ाव से अपना मूल्य प्राप्त करते हैं।
- डेरिवेटिव्स बाजार के, दो प्राथमिक प्रकार हैं: एक्सचेंज-ट्रेडेड डेरिवेटिव्स (ईटीडी) और ओवर द काउंटर (ओटीसी) डेरिवेटिव्स।
- मानकीकृत नियमों और शर्तों की विशेषता वाले ईटीडी का स्टॉक एक्सचेंजों पर कारोबार किया जाता है, जिससे निवेशकों को स्थापित नियमों और विनियमों के साथ इन उपकरणों तक आसान पहुंच मिलती है।
- इसके विपरीत, ओटीसी डेरिवेटिव्स निजी समकक्षों के बीच सीधे व्यापार किए जाने वाले अनुकूलित अनुबंध हैं, जो अक्सर विशिष्ट जोखिम प्रबंधन आवश्यकताओं के अनुरूप होते हैं लेकिन एक्सचेंज-ट्रेडेड की तरह इनमें पारदर्शिता और नियामक निरीक्षण की कमी होती है।

➢ **रुपया-मूल्य वाले मुद्रा अनुबंधों के लिए नए मानदंड:**

- नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) और बीएसई जैसे प्रमुख भारतीय एक्सचेंजों पर रुपये-मूल्य वाले मुद्रा अनुबंधों के व्यापार में हाल के घटनाक्रम ने नई नियामक आवश्यकताओं को उजागर किया है।
- ऐसे अनुबंधों में संलग्न व्यापारियों को अब अंतर्निहित जोखिम प्रदर्शित करना अनिवार्य है, जो अंतर्निहित परिसंपत्तियों से सीधा संबंध दर्शाता है, भले ही इनकी सीमाएँ अलग-अलग हों।
- इसमें व्यापारियों को 100 मिलियन डॉलर तक की स्थिति के लिए साक्ष्य प्रदान करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता है, वे बाजार की अखंडता और जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ाने के लिए नियामक प्रयासों के साथ सैरेखित करते हुए, अंतर्निहित जोखिम की उपस्थिति की पुष्टि करने के लिए बाध्य हैं।
- शब्द "अंतर्निहित एक्सपोज़र" में दस्तावेज़ीकरण के विभिन्न रूप शामिल हैं, जिसमें निर्यातकों/आयातकों के लिए ऑर्डर बिल या रसीदें और प्रेषण के लिए सहायक दस्तावेज़ शामिल हैं, जैसा कि भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) जैसे नियामक अधिकारियों द्वारा स्पष्ट किया गया है।
- इसके अलावा, रुपये से जुड़े एक्सचेंज-ट्रेडेड करेंसी डेरिवेटिव्स (ईटीसीडी) में भागीदारी विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा), 1999 और इसके साथ जुड़े नियमों के अनुपालन के अधीन है, जो मुद्रा डेरिवेटिव्स लेनदेन में नियामक पालन के महत्व पर जोर देते हैं।
- ये नियम रुपये से जुड़े मुद्रा डेरिवेटिव्स अनुबंधों के व्यापार की अनुमति देते हैं, चाहे ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) या एक्सचेंज-ट्रेडेड, मुख्य रूप से विदेशी मुद्रा दर जोखिमों के जोखिम से बचाव के उद्देश्य से, जिससे अधिक मजबूत और जोखिम-जागरूक को बढ़ावा मिलता है।

इलेक्ट्रोएन्सेफलोग्राफी

संदर्भ: *अपनी खोज के सौ साल बाद आज भी, ईईजी मस्तिष्क की जटिलताओं को समझने के लिए एक अनिवार्य उपकरण बना हुआ है।*

➢ **चिकित्सा पद्धति में ईईजी के उपयोग का अवलोकन:**

- इलेक्ट्रोएन्सेफलोग्राम (ईईजी), जिसे आमतौर पर ईईजी के रूप में जाना जाता है, मस्तिष्क की विद्युत गतिविधि को मापने के लिए एक महत्वपूर्ण चिकित्सा परीक्षण है।
- मस्तिष्क की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए इसे अक्सर न्यूरोलॉजिकल विकार वाले रोगियों पर नियोजित किया जाता है।
- आमतौर पर, ईईजी प्रक्रियाएं लगभग 30 मिनट तक चलती हैं, लेकिन नैदानिक या चिकित्सीय उद्देश्यों के लिए निरंतर निगरानी से गुजरने वाले रोगियों के लिए लंबी अवधि, यहां तक कि दिनों या हफ्तों तक भी बढ़ सकती हैं।

➢ **ईईजी का ऐतिहासिक संदर्भ और विकास:**

- ईईजी को खोज 1924 में हैन्स बर्जर ने की थी।
- कालांतर में वर्ष 1934 में बोस्टन के चिकित्सकों ने पेटिट माल (petit mal) और मिर्गी के रोगियों में दौरे के समय ईईजी का प्रयोग किया, इससे ईईजी के मुख्यधारा के नैदानिक उपचार का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- 1937 में पहली नैदानिक ईईजी प्रयोगशाला की स्थापना की गई थी। इसके बाद ईईजी दुनिया भर के संस्थानों द्वारा उपयोग किए जाने वाले एक परिष्कृत निदान उपकरण के रूप में विकसित हुआ है।

➢ **ईईजी से संबंधित बुनियादी बातें**

- ईईजी मस्तिष्क पर लगाए गए इलेक्ट्रोड के माध्यम से मस्तिष्क के अंदर की विद्युत गतिविधि को रिकॉर्ड करता है साथ ही न्यूरोनल गतिविधि द्वारा उत्पन्न विद्युत के प्रवाह को मापता है।
- न्यूरोनल फायरिंग एक्शन पोटेंशिअल को ट्रिगर करती है, जिसके परिणामस्वरूप विद्युत उत्पन्न होती है और न्यूरॉन्स के भीतर और बाहर करंट प्रवाह होता है।
- ईईजी रिकॉर्डिंग में डेल्टा, थीटा, अल्फा, बीटा और गामा तरंगों सहित विभिन्न आवृत्ति वाली तरंगें शामिल होती हैं, जो मस्तिष्क गतिविधियों की गतिशील प्रकृति को दर्शाते हैं।
- विशेष रूप से, ईईजी सहज और पहचानने योग्य पैटर्न निर्मित करता हैं और यह पैटर्न नैदानिक निदान तथा रोग प्रबंधन में सहायता करते हैं।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

6 April, 2024

SCHEMATIC DIAGRAM OF AN EEG MACHINE

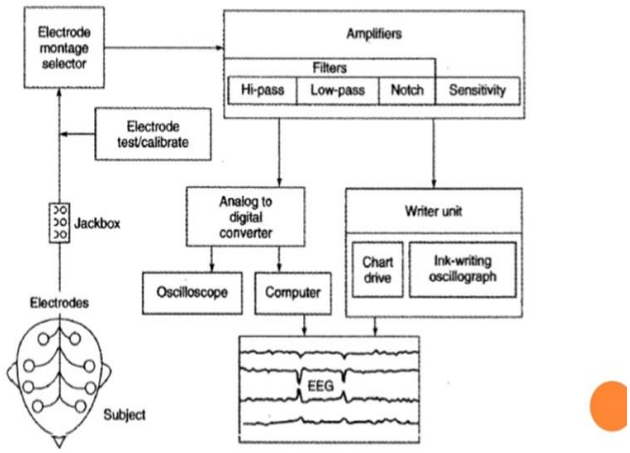

➢ **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के साथ ईईजी का एकीकरण:**

- एआई प्रौद्योगिकियों के साथ ईईजी का अभिसरण नैदानिक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए नवीन आशा प्रस्तुत करता है।
- एआई सिस्टम ईईजी डेटा का विश्लेषण कर सकता है, यह मस्तिष्क गतिविधियों और न्यूरोलॉजिकल स्थितियों के संदर्भ में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।
- एआई में हाल की प्रगति ने ईईजी संकेतों से मानसिक गतिविधि को चिन्हित करने की क्षमता का प्रदर्शन किया है, जिससे तंत्रिका विज्ञान में नवीन अनुप्रयोगों का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

भारत में जलाशयों का गिरता जल स्तर

संदर्भ: *इस समय देश भर के प्रमुख जलाशयों और नदी घाटियों में जल स्तर गिरता जा रहा है, यह जल स्तर चरम गर्मी आने से पहले ही अपने निम्तम स्तर पर पहुंच गया है।*

- 4 अप्रैल, 2024 को केंद्रीय जल आयोग द्वारा जारी आंकड़ों से जल स्तर में गिरावट की चिंताजनक प्रवृत्ति का पता चला है।
- पिछले मानसून सीज़न के दौरान से ही कम वर्षा के कारण कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में पानी की कमी का सामना करना पड़ रहा है।

➢ **प्रमुख जलाशयों में जल भंडारण:**

- वर्तमान में, सीडब्ल्यूसी द्वारा निगरानी किए गए भारत के 150 प्रमुख जलाशयों में जल भंडारण क्षमता 61.801 बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम) है, जो कुल जल भंडारण क्षमता का केवल 35% है।
- यह भंडारण स्तर पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में कम है और पिछले 10 वर्षों के औसत भंडारण से नीचे है।
- यद्यपि यह भंडारण लगातार कम होता जा रहा है, हाल के सप्ताहों में यह जल स्तर 64.606 बीसीएम से गिरकर 61.801 बीसीएम हो गया है।

➢ **नदी घाटियों में जल स्तर:**

- महानदी और पेन्नार घाटियों के बीच पूर्व की ओर बहने वाली 13 नदियों में लगातार तीन हफ्तों से पानी का अभाव हैं।
- पेन्नार और कावेरी जैसी प्रमुख नदी घाटियों में क्रमशः अत्यधिक कमी और न्यून जल स्तर का अनुभव हो रहा है, जिसमें पिछले सप्ताहों की तुलना में उल्लेखनीय गिरावट आई है।

➢ **क्षेत्रीय जलाशय भंडारण:**

- कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और केरल सहित दक्षिणी क्षेत्र में जलाशय अपनी क्षमता का केवल 20% ही भरे हैं।
- उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी और मध्य क्षेत्रों में जल स्तर 32% से 45.24% तक है, जो देश के विभिन्न हिस्सों में पानी की कमी की अलग-अलग डिग्री का संकेत देता है।

➢ **प्रमुख बांधों और जलाशयों पर प्रभाव:**

- आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में नागार्जुन सागर और श्रीशैलम और कर्नाटक में तुंगभद्रा और घाटप्रभा जैसे प्रमुख बांधों में जल स्तर घट रहा है।
- ये बांध सिंचाई जल, पेयजल और बिजली उत्पादन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

➢ **राज्यवार जल स्तर:**

- सीडब्ल्यूसी द्वारा निगरानी किए गए 21 राज्यों में से तेरह में पानी का स्तर 'सामान्य' भंडारण से नीचे है, जो देश भर में व्यापक पानी की कमी का संकेत देता है।
- 'सामान्य' भंडारण से तात्पर्य पिछले 10 वर्षों के औसत भंडारण से है।

नदी बेसिन भंडारण में गिरावट: ऋशिकुल्या, वामसधारा, नागावली और मुसी सहित तेरह नदियों में 21 मार्च से पानी नहीं है, जिससे कुल क्षेत्रफल का लगभग 60% कृषि क्षेत्र प्रभावित हुआ है।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

थोलू बोम्मालता

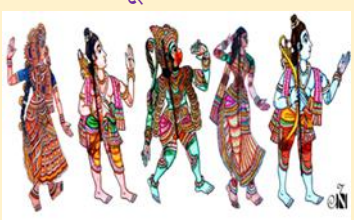

हाल ही में, संगीत नाटक अकादमी ने कठपुतली की एक प्राचीन शैली थोलू बोम्मलता के पुनरुद्धार का कार्य किया है जो विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रही है।

थोलू बोम्मालता के बारे में

- थोलू बोम्मालता, जिसे "बोम्मालट्टम" या "तोलपावा कूथु" के नाम से भी जाना जाता है, एक छाया कठपुतली कला है जिसकी उत्पत्ति तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास भारत के आंध्र प्रदेश के गोदावरी क्षेत्र में हुई थी।
- तमिल में "टोलू" शब्द का अर्थ है चमड़ा, और "बोम्मालट्टम" का अर्थ है कठपुतली।
- कठपुतलियाँ पारभासी, रंगीन चमड़े से बनी होती हैं और रंगीन फोटोग्राफिक पारदर्शिता की तरह छोटी स्क्रीन पर प्रक्षेपित की जाती हैं।
- कठपुतली चलाने वाला पीछे से दो डंडियों से कठपुतलियों को चलाता है और कठपुतलियाँ संगीत, नृत्य और जीवंत दृश्यों के मिश्रण के माध्यम से महाकाव्यों से पौराणिक और लोक कथाएँ सुनाती हैं।
- कठपुतलियाँ प्रायः जानवरों, पक्षियों, देवताओं और राक्षसों को चित्रित करती हैं।
- भारत सरकार ने 2008 में थोलु बोम्मालता को भौगोलिक संकेत (जीआई) के रूप में नामित किया।
- इसे भारत सरकार द्वारा अपने एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) पहल के एक भाग के रूप में मान्यता प्राप्त है।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

नियंत्रण रेखा

हाल ही में, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा बलों ने उत्तरी कश्मीर में बारामूला के उरी सेक्टर में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास सबुरा नाला में आतंकवादियों की घुसपैठ की कोशिश को सफलतापूर्वक विफल कर दिया।

नियंत्रण रेखा के बारे में:

- नियंत्रण रेखा (एलओसी) एक सैन्य नियंत्रण रेखा है जो जम्मू और कश्मीर की पूर्व रियासत के उन हिस्सों को अलग करती है जो भारत और पाकिस्तान द्वारा नियंत्रित हैं।
- दोनों देशों के बीच शिमला समझौते के बाद 1972 में इसे एलओसी के रूप में नामित किया गया था।
- एलओसी कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त अंतरराष्ट्रीय सीमा नहीं है लेकिन यह वास्तविक सीमा के रूप में कार्य करती है।
- यह 460 मील (740 किमी) लंबी है और शिमला समझौते द्वारा स्थापित किया गया था जिसने 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध को समाप्त कर दिया था।
- यह जेहलम घाटी मार्ग के करीब स्थित है।
- 25 फरवरी, 2021 को भारत और पाकिस्तान ने LOC पर युद्धविराम की घोषणा की।

राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग

तेलंगाना में नौ मेडिकल कॉलेजों की स्थापना की जा रही है इसके लिए राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) ने उनके आवेदनों को आगे बढ़ा दिया है।

राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के बारे में:

- राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) एक भारतीय नियामक संस्था है जो चिकित्सा शिक्षा और पेशेवरों को नियंत्रित करती है।
- इसे अगस्त 2019 में संसद के एक अधिनियम द्वारा मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया (एमसीआई) की जगह स्थापित किया गया था और यह 25 सितंबर, 2020 को लागू हुआ।
- यह पूरे भारत में चिकित्सा शिक्षा, पेशे और संस्थानों को नियंत्रित करता है।
- यह चिकित्सा शिक्षा के लिए मानक निर्धारित करता है और चिकित्सा योग्यताओं को मान्यता प्रदान करता है।
- राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) में 25 सदस्य शामिल हैं जो मुख्य रूप से केंद्र सरकार द्वारा नामित होते हैं जिनका कार्यकाल चार वर्ष का होता है।
- इसके अतिरिक्त, इसमें राज्यों या राज्य चिकित्सा परिषदों का प्रतिनिधित्व करने वाले 11 अंशकालिक सदस्य शामिल हैं जबकि एनएमसी अध्यक्ष और अन्य केंद्र सरकार द्वारा नामित सदस्य पुनर्नामांकन के लिए अयोग्य हैं।
- सदस्यों में चिकित्सा शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और प्रशासन से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता वाले व्यक्ति शामिल हैं।
- मेडिकल असेसमेंट एंड रेटिंग बोर्ड (एमएआरबी) एनएमसी का एक महत्वपूर्ण घटक है जो देश भर में चिकित्सा संस्थानों के मूल्यांकन और रेटिंग के लिए जिम्मेदार है।

पैरा फसल प्रणाली

हाल ही में, ओडिशा पैरा फसल प्रणाली का उपयोग करके अपनी चावल परती पहल के माध्यम से जलवायु-लचीली कृषि को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है।

पैरा फसल प्रणाली के बारे में:

- पैरा फसल प्रणाली एक पारंपरिक कृषि पद्धति है जो मुख्य रूप से तटीय क्षेत्रों में देखी जाती है, विशेष रूप से ओडिशा आदि राज्यों में।
- इस कृषि पद्धति में, मसूर, लैथिरस, उर्दबीन या मूंग जैसी फसलों के बीजों को चावल की खड़ी फसल में उसकी कटाई से लगभग 2 सप्ताह पहले बो दिया जाता है।
- पैरा फसल के लिए न्यूनतम हस्तक्षेप और लागत की आवश्यकता होती है क्योंकि यह धान के खेतों के मौजूदा बुनियादी ढांचे का उपयोग करती है और प्राकृतिक नमी पर निर्भर रहती है।
- यह मिट्टी के क्षरण को कम करती है और उर्वरक अनुप्रयोग को अनुकूलित करती है, जिससे टिकाऊ कृषि पद्धतियों में योगदान मिलता है।
- यह प्रणाली ओडिशा के कृषि परिदृश्य में महत्वपूर्ण रही है, जिसने फसल विविधीकरण और कृषि आय बढ़ाने में योगदान दिया है।

सुर्खियों में स्थल

नॉर्वे

हाल ही में, नॉर्वे ने अगले 12 वर्षों में अपने रक्षा बजट को 83% तक बढ़ाने का लक्ष्य घोषित किया।

नॉर्वे (राजधानी: ओस्लो)

अवस्थिति : नॉर्वे, जिसे औपचारिक रूप से नॉर्वे साम्राज्य के रूप में जाना जाता है, उत्तरी यूरोप में एक नॉर्डिक देश है, जो स्कैंडिनेवियाई प्रायद्वीप पर स्थित है।

भौगोलिक सीमाएँ: नॉर्वे अपनी सीमाएँ स्वीडन (पूर्व), फ़िनलैंड और रूस (उत्तर पूर्व), नॉर्वेजियन सागर, अटलांटिक महासागर (पश्चिम और दक्षिण), आर्कटिक महासागर (उत्तर), उत्तरी सागर (दक्षिण) के साथ साझा करता है।

भौतिक विशेषताएं:

- नॉर्वे का सबसे ऊँचा स्थान गैल्डहोपिगेन है।
- नॉर्वे की प्रमुख नदियों में ग्लोम्मा, न्यूमेडल्स्लोगेन, ड्रामेंसेल्वा, ताना और वेफ्स्ना शामिल हैं।
- नॉर्वे लौह अयस्क, तांबा, जस्ता, निकल, टाइटेनियम और फॉस्फेट जैसे खनिजों से समृद्ध है।
- सदस्यता: यह नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) का सदस्य है।

POINTS TO PONDER

- लोकसभा चुनाव नजदीक आने के साथ, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रसारित होने वाली गलत सूचना का प्रमुख रूप क्या है? – **शैलो फेक (Shallow fakes)**
- 1990 के दशक में एएसआई उत्खनन के माध्यम से प्रकाश में आए उपेक्षित सन्नती बौद्ध स्थल की पुनरुद्धार परियोजना कब शुरू हुई? – **2022 में**
- आंध्र प्रदेश के अल्लूरी सीतारमा राजू जिले में हाल ही में कौन सी घटना घटी जिसमें वन विभाग के अधिकारी शामिल थे? – **भारतीय लॉरेल पेड़ की छाल को काटना, जिसके परिणामस्वरूप पानी निकला**
- भारत में निर्मित स्वदेशी LCA तेजस मार्क 1A लड़ाकू विमान की पहली उड़ान कहाँ पूरी की गई? – **बेंगलुरु**
- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा हाल ही में कौन सा ऐप लॉन्च किया गया है? – **myCGHS ऐप (केंद्र सरकार स्वास्थ्य योजना)**